1857 का विद्रोह

अंग्रेजो के द्वारा भारत का हर संभव तरीके से आर्थिक शोषण किया जा रहा था। इस शोषण को अधिकतम करने के उद्देश्य से राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सैन्य निर्णय लिये जा रहे थे।

→ भारतीय समाज का प्रत्येक वर्ग अंग्रेजो से किसी न किसी रूप मे पीड़ित था, इन पीड़ित भारतीय लोगो का गुस्सा 1857 के विद्रोह मे प्रकट हुआ।

→ 1857 के विद्रोह के पीछे निम्न कारण थे-

(i) राजनैतिक कारण :- लॉर्ड डलहौजी के द्वारा आक्रामक नीति अपनाकर पंजाब, एवं निचले बर्मा के "पीगू" क्षेत्र पर कब्जा कर लिया गया था।

→ लॉर्ड डलहौजी ने गोद निषेध नीति को बड़े पैमाने पर लागू करके, सतारा, (1848), जैतपुर, संबलपुर (1849), बघाट (1850), उदयपुर (छत्तीसगढ़-1852), झाँसी (1853), एवं नागपुर को अंग्रेजी शासन मे मिला लिया गया।

→ अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर इसे अंग्रेजी राज्य मे शामिल कर लिया गया। इन सब कारणो से भारत के अन्य शासक भी इस बात से भयभीत हो गये थे कि अंग्रेज कोई भी बहाना बनाकर उनके राज्य को किसी भी समय छीन सकते है।

→ अंग्रेजो के द्वारा सिक्को से मुगल बादशाह को हटा दिया गया। मुगल बादशाह को लालकिला छोड़ने का आदेश दे दिया गया था वही 1856 ई. मे लॉर्ड कैनिंग ने यह घोषणा की- "बहादुरशाह जफ्फर की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र को बादशाह के पदनाम की बजाय केवल शहजादा कहा जायेगा"।
भारत के लोग मुगल बादशाह के प्रति अंग्रेजो द्वारा किये जा रहे व्यवहार से भी नाराज थे।

→ अंग्रेजो के द्वारा पेशवा बाजीराव-II के दत्तक पुत्र "नाना साहेब" की भी पेन्शन बंद कर दी थी, जिससे वो भी अंग्रेजो से नाराज थे।

(ii) प्रशासनिक कारण :- प्रशासन के उच्च पदो पर केवल अंग्रेजो, या युरोपीय लोगो की नियुक्ति की जाती थी भारतीयो को भ्रष्ट, तथा मुर्ख समझा जाता था

→ पुलिस के द्वारा भी भारतीयो पर अत्याचार किये जाते थे।

→ न्यायपालिका पक्षपाती थी, तथा केवल अंग्रेजो एवं धनी लोगो के पक्ष मे निर्णय लेती थी।

(iii) आर्थिक कारण :- अंग्रेजो का मुल उद्देश्य भारत से धन को ब्रिटेन लेके जाना था।

आरम्भ मे इसके लिये "वाणिज्यवाद" की विचारधारा का प्रयोग किया गया, जिसमे कम से कम किमत पर भारत से सामान खरीद कर युरोप मे ऊंची दरो पर बेचकर लाभ कमाया गया।

→ ब्रिटेन मे औद्योगिक क्रांति हो जाने के पश्चात् वे भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता एवं तैयार माल के बाजार के रूप मे उपयोग मे ले रहे थे।

→ भू-राजस्व की अधिकतम वसुली के लिये भारत के बचे हुए क्षेत्रो को अंग्रेजी राज्य मे मिलाया जा रहा था।

→ बम्बई प्रेसीडेन्सी मे जागीरो की जाँच करने के लिये एक "इनाम आयोग" का गठन किया गया, जिसके आधार पर लगभग 20000 जमींदारो से उनकी जमीन छीन ली गई।

(iv) सामाजिक कारण :- अंग्रेजो के द्वारा भारत मे समाज सुधार के लिये कई कानून पारित किये गये थे - जैसे - कन्याशिशु हत्या निषेध, सतीप्रथा शोकथाम अधिनियम, विधवा पुनर्विवाह अधिनियम इत्यादि।
भारत के परम्परागत विचारो को मानने वाले लोगो को यह लगा कि अंग्रेज उनके सामाजिक मामलो मे दखल देने की कोशिश कर रहे है।
→ अंग्रेजो के द्वारा महिला शिक्षा के लिये विद्यालयो को खोलना भी इस वर्ग को अच्छा नही लगा था।

(v) धार्मिक कारण :- 1850 ई. मे लॉर्ड डलहौजी के द्वारा "धार्मिक निर्योग्यता उन्मूलन अधिनियम" पारित किया गया था जिसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति ईसाई धर्म ग्रहण कर ले तो उसे उसकी पैतृक सम्पति से वंचित नही किया जा सकता।
लेक्सलॉ की अधिनियम
→ ईसाई धर्म प्रचारको द्वारा भी बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन के प्रयास किये जा रहे थे, जिसको लेकर भी भारतीयो मे असंतोष था।

(vi) सैन्य कारण :- भारतीय सैनिको को यूरोपीय सैनिको की तुलना मे कम वेतन मिलता था।
इनके धार्मिक एंव सामाजिक विश्वासो का अंग्रेजो के द्वारा अपमान किया जाता था।
→ 1854 ई. मे लॉर्ड डलहौजी के द्वारा "डाक अधिनियम" पारित किया गया था जिसके कारण सैनिको को मुफ्त डाक सुविधा मिलनी बंद हो गई।
→ 1856 ई. मे लॉर्ड कैनिंग के द्वारा "सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम पारित किया गया था जिसके अनुसार - नये भर्ती होनेवाले सैनिको को इस बात कि सहमति देनी होती थी कि वे भारत व भारत से बाहर अपनी सेवाएँ देने के लिए तैयार है।

तत्कालीन भारतीय समाज में यह माना जाता था कि यदि कोई व्यक्ति एक बार समुद्रपार चला जाता था तो उसका धर्मभ्रष्ट हो जाता था।

(vii) तत्कालीन कारण :- 1857 के विद्रोह पर तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतुसो को माना जाता है।
अंग्रेजो ने पूर्व मे काम मे ली जा रही "ब्राउन बेस" नामक बन्दुको के स्थान पर नई "एनफील्ड राइफलो" को काम मे लेना आरंभ किया था। ↳ जून 1856 से प्रारम्भ

→ इन राइफलो मे कारतुसो को भरने से पहले इन्हे दाँत से काटना पड़ता था, ऐसा माना जाता है कि इन कारतूसो का बाहरी आवरण गाय एवं सुअर की चर्बी से बना हुआ था।

→ हिन्दू एवं मुसलमान दोनो ही धर्म के सिपाहियों को लगा कि अंग्रेज उनका धर्म भ्रष्ट करना चाहते है या उन्हे ईसाई बनाना चाहते है।

* विद्रोह का आरम्भ एवं विस्तार :- मंगल पाण्डेय को 1857 के विद्रोह का पहला शहीद माना जाता है। इन्होने चर्बी वाले कारतुसो का उपयोग करने से मना कर दिया तथा अंग्रेज अधिकारियो पर गोली चला दी। जिसके कारण "लेफ्टिनेंट बाग तथा सार्जेंट मेजर ह्यूसन" की मृत्यु हो गई थी।
यह घटना "29 मार्च 1857" को "बैरकपुर छावनी" मे घटित हुई।

→ मंगल पाण्डे तथा उनका साथ देने के लिये ईश्वरी पाण्डे को मृत्यु दण्ड दे दिया गया।

कुछ समय पश्चात् मेरठ की छावनी के सिपाहियों ने भी विद्रोह कर दिया।

→ "10 मई 1857 ई." को इसकी शुरुआत हुई।
मेरठ से विद्रोही सिपाही दिल्ली चले गये तथा बहादुरशाह जफ्फर को विद्रोह का नेतृत्व करने के लिये राजी कर लिया। तथा "12 मई को विद्रोह" का नेता" घोषित किया।

→ इस क्रान्ति की खबर सुनकर भारत के अन्य क्षेत्रों में भी विद्रोह आरम्भ हो गये।
यह क्रान्ति असम से लेकर राजस्थान के क्षेत्र तक लगभग पुरे उतरी भारत में फैल गई थी।

→ ** ग्वालियर, जिंद, पटियाला, जयपुर, हैदराबाद, उदयपुर, बीकानेर, कोटा, टोंक इत्यादि के शासको ने क्रान्ति को दबाने में अंग्रेजो को सहयोग दिया।
- गोरखा तथा सिक्ख भी अंग्रेजो के समर्थक रहे।
- बंगाल के जमींदारो ने भी अंग्रेजो का सहयोग किया।

→ दक्षिणी भारत सामान्यतः इस क्रान्ति से अलग रहा।
पढ़े-लिखे मध्यम वर्ग ने भी क्रान्ति में कोई भागीदारी नही निभाई। अर्थात् बुद्धीजीवी वर्ग तटस्थ रहा।

→ क्रान्ति योजनाकार - अज्मीमुल्ला खाँ] 31 मई से क्रान्ति
रंगोजी बापू] तय हुई।

→ अंग्रेजो का पुनः दिल्ली पर अधिकार 14 सितम्बर 1857 को।

क्रान्ति /विद्रोह का क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता	दमनकर्ता अंग्रेज अधिकारी
1.) दिल्ली	- बहादुरशाह जफर - खान बहादुर (बख्तखाँ)	- निकलसन तथा हडसन * निकलसन मारा गया।
2.) कानपुर	- अज्जीमुल्ला खाँ - नाना साहेब (धुंधुपंत) - तात्या टोपे	- कैम्पबेल *
3.) लखनऊ	- बेगम हजरत महल - बिरजिस कादिर	- कैम्पबेल * हेनरी लोरेन्स अधिकारी मारा गया।
4.) झाँसी	- रानी लक्ष्मीबाई - तात्या टोपे	- ह्यूरोज
5.) जगदीशपुर व आरा (बिहार)	- कुँवर सेन (MOST Repeated) * सफल नेतृत्वकर्ता	- डब्ल्यू टेलर
6.) फैजाबाद (अयोध्या)	- मौलवी अहमदुल्ला (→ अंग्रेजो का कट्टर विरोधी) * 50000 इनामी अंग्रेजो द्वारा	- कैम्पबेल
7.) बनारस	- लियाकत अली	- कैप्टन नील
8.) बरेली (रूहेलखण्ड)	- खान बहादुर	-
9.) बड़ौत	- शाहमल तोमर * इन्होने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह करने के लिये 84 गाँव के मुखियाओ को इकट्ठा किया।	-
10.) असम	- दीवान मणिराम	
11.) उड़ीशा-सम्भलपुर	— सुरेन्द्रशाही एवं उज्जवलशाही	

ACADEMY

1857 विद्रोह संदर्भ में राजस्थान की भूमिका :-

→ 1857 की क्रान्ति के समय राजस्थान का सबसे महत्वपूर्ण अंग्रेज अधिकारी (AGG) – जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स था।

→ क्रान्ति की शुरुआत नसीराबाद छावनी (28 मई 1857) में हुई।

→ ब्यावर तथा खैरवाड़ा छावनियों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया।

→ इस क्रान्ति के समय जोधपुर के अंग्रेज पॉलिटीकल एजेन्ट मैकमॉसन तथा कोटा के P.A. - मेजर बर्टन मारे गये थे।

→ जोधपुर की सेना तथा अंग्रेजों की सेना को संयुक्त रूप से आउवा के ठाकुर कुशालसिंह चंपावत ने बिठौड़ा युद्ध में पराजित किया।

* **1857 की क्रान्ति का स्वरूप :-** इस क्रान्ति के स्वरूप को लेकर अलग-अलग इतिहासकारों तथा राजनितिज्ञों के अलग-अलग विचार रहे है -

क्रांति का स्वरूप	विचारक / इतिहासकार
1) सिपाही विद्रोह	- अधिकांशतः साम्राज्यवादी इतिहासकार जैसे - जॉन शीले, जॉन लॉरेन्स ट्रेवलियन इत्यादि - सर सैयद अहमद खाँ - मुंशी जीवनलाल - दुर्गादास बनर्जी / बन्द्योपाध्याय
2) राष्ट्रीय विद्रोह / प्रथम स्वतंत्रता संग्राम - डॉ. ताराचन्द	- बेंजामिन डिजरायली - विनायक दामोदर सावरकर - अशोक मेहता
3) सामंती विद्रोह	- अधिकांशः साम्यवादी / मार्क्सवादी इतिहासकार - जवाहरलाल नेहरू - R.C. मजूमदार

4.) कट्टरपंथियो का ईसाईयो के विरूद्ध विद्रोह - L.E.R. रीज

5.) हिन्दु व मुसलमानो का ईसाईयो के खिलाफ विद्रोह - (IMP) जेम्स आउट्रम और डब्ल्यू टेलर

6.) यह सभ्यता और बरबरता के मध्य युद्ध - - T.R. होम्स

7.) गोरी-काली नस्ल का संघर्ष - J.G. मेडंले

* 1857 क्रान्ति के परिणाम :-

अग्रेंजो के द्वारा कुछ भारतीय राजा-महाराजाओ के सहयोग से इस विद्रोह का दमन कर दिया गया था।

→ विद्रोह के दमन के पश्चात "1 नवम्बर-1858 ई." मे "लॉर्ड कैनिंग" ने ब्रिटेन की "महारानी-विक्टोरिया की घोषणा" को "इलाहबाद" मे पढ़ा।

→ इस घोषणा के अनुसार (i) भारत मे कम्पनी के शासन को समाप्त कर दिया गया था तथा भारत के शासन की सीधी जिम्मेदारी ब्रिटेन की सरकार ने ले ली थी।

(ii) ब्रिटेन की सरकार द्वारा "गोद निषेध नीति को त्याग" दिया गया।

(iii) अग्रेंजो ने यह विश्वास दिलाया की वे भारत मे अब कोई नया-क्षेत्र पर कब्जा नही किया जायेगा।
राजा-महाराजाओ के सम्मान को बरकरार रखा जायेगा।

(iv) क्रान्ति मे शामिल होने वाले ऐसे सभी लोगो को सामुहिक माफी दे दी जायेगी, जो किसी अग्रेंज की हत्या मे शामिल नही थे।

(v) अंग्रेजो के द्वारा भारतीयो के सामाजिक एवं धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप नही किया जायेगा।

* भारत मे अच्छे शासन के लिये अधिनियम -1858 ई :-

तहत - (i) कम्पनी का शासन समाप्त कर दिया गया। तथा भारत का शासन प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी सरकार ने अपने हाथ मे ले लिया।

(ii) बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल (BoC) को भंग कर दिया गया भारत मे पिट्स इण्डिया एक्ट -1784 ई. के बाद से चल रहे द्वैध शासन को समाप्त कर दिया गया।

(iii) भारत के शासन को संभालने के लिये ब्रिटेन मे भारत सचिव तथा 15 सदस्यो को मिलाकर भारत परिषद् का गठन किया गया।

इन 15 सदस्यो मे से 8 सदस्य ब्रिटेन शासक द्वारा तथा 7 सदस्यो की नियुक्ति कम्पनी ~~से द्वारा की जाई~~ लिये गई थी।

> भारत परिषद् = भारत सचिव + 15 सदस्य
> ↓
> 8 (BoC) + 7 (EIC)

(iv) भारत के गवर्नर जनरल का पदनाम बदलकर वायसराय कर दिया गया।

* महत्वपूर्ण तथ्य :-

→ 1857 का विद्रोह मुख्य रूप से भारतीय सैनिको द्वारा किया गया था। विद्रोह से पहले कम्पनी की सेना मे भारतीयो एवं अंग्रेज सैनिको का अनुपात 5:1 था।

सैनिको मे भारतीयो की संख्या लगभग 238000 थी जबकि अंग्रेज सैनिको की संख्या 45000 थी।

- विद्रोह के पश्चात भारतीय सैनिको की संख्या को कम करके 140000 कर दिया जबकि अंग्रेज सैनिको की संख्या मे वृद्धि की गई।

ACADEMY

→ बंगाल प्रेसीडेन्सी मे भारतीय एवं अंग्रेज सैनिको का अनुपात 2:1 रखा गया, जबकि मद्रास एवं बम्बई प्रेसीडेंसी मे भारतीय व अंग्रेज सैनिको का अनुपात 3:1 रखा गया।

→ भारतीय सैनिको को महत्वपूर्ण पदो - तोपखाने, एवं सिग्नल सेवा से दूर रखा जाता था।

→ बाँटो और राज करो की नीति लागु करने के लिये जाति, धर्म एवं क्षेत्र के आधार पर सेना की टुकड़ियो का गठन किया गया।

→ भारतीय सेना का यह "पुनर्गठन पील आयोग" 1861 की सिफारिशो के आधार पर किया गया था।

* → सेना समिश्रण योजना के तहत कम्पनी की सेना को अंग्रेजी सरकार की सेना मे परिवर्तित कर दिया गया। 1861

* 1857 की क्रान्ति के संबध मे बनाये गये कुछ महत्वपूर्ण चित्र:-

(i) The clemency of Canning - ब्रिटेन की मशहुर पत्रिका पंच के द्वारा कैनिंग की दयालुता को लेकर व्यंग्य के रूप मे बनाया गया कार्टुन।
कैनिंग की दयालुता
क्योकी कैनिंग का मानना था कि भारतीय सिपाहियो के साथ नर्मी से पेश आना चाहिए ताकि उनका अंग्रेजो के प्रति भरोसा बढ़े।

(ii) IN memoriam - Joseph Noel Paton
इन मेमोरियल : जोसफ नोयल पेटन
* यह पेन्टिंग 1857 क्रान्ति समय कानपुर मे अंग्रेज महिलाओ की दशा के बारे मे बताती है।

iii) The Relief of Lucknow : Thomas Jhons Baeker
द रिलीफ ऑफ लखनऊ : थॉमस जॉन्स बार्कर

iv) Justice : Jhon Tenial/ थॉमस बार्कर
जस्टिस : जॉन टेनियल (पंच पत्रिका मे)

v) The British Lion's vengeance on the Bengal Tiger - John Tenniel (पंच पत्रिका)
द ब्रिटिश लॉयन्स वेंगेन्स ऑन बंगाल टाइगर : जॉन टेनियल

* 1857 के विद्रोह के संबंध मे लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तके व लेखक :-

1.) एटीन फिफ्टीन सेवन (1857) - S.N सेन
2.) The Great Revolution (महान् विद्रोह) - अशोक मेहता
3.) The Indian mutiny of 1857 - मॉलसेन
4.) The Sepoy mutiny and the Revolation of 1857 - R.C मजुमदार
5.) The first war of Indian Independence - V.D सावरकर
भारत का I- स्वतंत्रता संग्राम - वीर सावरकर

* R.C मजुमदार के अनुसार - 1857 का विद्रोह न तो पहला, न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था।

* S.N सेन - प्रारम्भ मे यह धार्मिक विद्रोह था परन्तु बाद मे इसने स्वतंत्रता संग्राम का रूप ले लिया था।